

Chapter तेरह

भावी मनुओं का वर्णन

चौदह मनुओं में से छह मनुओं का वर्णन पहले हो चुका है। अब इस अध्याय में सातवें से चौदहवें मनुओं का एक-एक करके वर्णन किया जायेगा।

सातवाँ मनु विवस्वान का पुत्र है और श्राद्धदेव कहलाता है। उसके दस पुत्र हैं—इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट, तरूष, पृषध्र तथा वसुमान। इस मन्वन्तर के देवता हैं—आदित्यगण, वसुगण, रुद्रगण, विश्वेदेवा, मरुत्गण, अश्विनीकुमार तथा ऋभुगण इत्यादि। स्वर्ग का राजा इन्द्र पुरन्दर के नाम से जाना जाता है और सप्तर्षि कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि

तथा भरद्वाज के नामों से विख्यात हैं। इस मन्वन्तर में भगवान् विष्णु कश्यप के पुत्र के रूप में अदिति के गर्भ से उत्पन्न होते हैं।

आठवें मन्वन्तर के मनु सावर्णि हैं। उनके पुत्र निर्मोक आदि हैं और देवताओं में सुतपा आदि हैं। विरोचन-पुत्र बलि इन्द्र हैं और गालव तथा परशुराम सप्तर्षियों में से हैं। इस मन्वन्तर में भगवान् देवगुह्य तथा सरस्वती के पुत्र सार्वभौम के रूप में जन्म लेते हैं।

नवें मन्वन्तर में दक्ष सावर्णि मनु हैं। उनके पुत्रों में भूतकेतु प्रमुख है और देवताओं में मारीचिगर्भ इत्यादि। इन्द्र का नाम अद्भुत है और सप्तर्षियों में हैं द्युतिमान। इस मन्वन्तर में आयुष्मान् तथा अम्बुधारा से जन्मा ऋषभ अवतार होता है।

दसवें मन्वन्तर के मनु ब्रह्मसावर्णि हैं। उनके पुत्रों में भूरिषेण प्रमुख है और सप्तर्षियों में हविष्मान तथा अन्य हैं। देवताओं में सुवासन-गण प्रधान हैं और शम्भु इन्द्र है। इस मन्वन्तर का अवतार विष्वक्सेन है, जो शम्भु का मित्र है और विश्वस्रष्टा नामक ब्राह्मण के घर में विशूची के गर्भ से उत्पन्न हुआ ॥

ग्याहरवें मन्वन्तर में धर्मसावर्णि मनु हैं जिनके दस पुत्रों में सत्यधर्म प्रमुख है। देवताओं में विहंगम-गण तथा सप्तर्षियों में अरुण इत्यादि हैं। वैधृत इन्द्र था। इस मन्वन्तर में धर्मसेतु अवतार हुआ जो वैधृत तथा आर्यक से उत्पन्न हैं।

बारहवें मन्वन्तर में रुद्रसावर्णि मनु हैं जिनके पुत्रों में देववान प्रमुख है। देवताओं में हरितगण इत्यादि है, ऋतधामा इन्द्र है और सप्तर्षियों में तपोमूर्ति तथा अन्य हैं। इस मन्वन्तर का अवतार सुधामा या स्वधामा है, जो सुनृता के गर्भ से जन्म लेता है। उसके पिता का नाम सत्यसहा है।

तेरहवें मन्वन्तर के मनु देवसावर्णि हैं। उनके पुत्रों में चित्रसेन तथा देवताओं में सुकर्मा प्रमुख हैं। दिवस्पति इन्द्र है और निर्मोक सप्तर्षियों में से है। इस मन्वन्तर का अवतार योगेश्वर है, जिसके माता पिता बृहती तथा देवहोत्र हैं।

चौदहवें मन्वन्तर के मनु इन्द्रसावर्णि हैं। उनके पुत्रों के नाम उरु तथा गम्भीर हैं। पवित्रगण इत्यादि देवता, शुचि इन्द्र और अग्नि तथा बाहु इत्यादि सप्तर्षि हैं। इस मन्वन्तर का अवतार वृहद्भानु है, जो विताना के गर्भ से उत्पन्न है और सत्रायन का पुत्र है।

इन मनुओं का शासनकाल कुल मिलाकर एक हजार चतुर्युगों के तुल्य है अर्थात् ४३,००,००० गुना १,००० वर्ष का है।

श्रीशुक उवाच

मनुर्विवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेव इति श्रुतः ।
सप्तमो वर्तमानो यस्तदपत्यानि मे शृणु ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; मनुः—मनु; विवस्वतः—सूर्यदेव का; पुत्रः—पुत्र; श्राद्धदेवः—श्राद्धदेव; इति—इस प्रकार; श्रुतः—ज्ञात, विख्यात; सप्तमः—सातवाँ; वर्तमानः—इस समय; यः—जो; तत्—उसकी; अपत्यानि—सन्तानें; मे—मुझसे; शृणु—सुनो।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : वर्तमान मनु का नाम श्राद्धदेव है और वे सूर्यलोक के प्रधान देवता विवस्वान के पुत्र हैं। श्राद्धदेव सातवें मनु हैं। अब मैं उनके पुत्रों का वर्णन करता हूँ कृपा करके मुझसे सुने।

इक्ष्वाकुर्नभगश्चैव धृष्टः शर्यातिरेव च ।
नरिष्यन्तोऽथ नाभागः सप्तमो दिष्ट उच्यते ॥ २ ॥
तरुषश्च पृषधश्च दशमो वसुमान्स्मृतः ।
मनोर्वैवस्वतस्यैते दशपुत्राः परन्तप ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

इक्ष्वाकुः—इक्ष्वाकु; नभगः—नभग; च—भी; एव—निस्सन्देह; धृष्टः—धृष्ट; शर्यातिः—शर्याति; एव—निश्चय ही; च—भी; नरिष्यन्तः—नरिष्यन्त; अथ—भी; नाभागः—नाभाग; सप्तमः—सातवाँ; दिष्टः—दिष्ट; उच्यते—विख्यात है; तरुषः च—तथा तरुष; पृषधः च—तथा पृषध; दशमः—दसवाँ; वसुमान्—वसुमान; स्मृतः—ज्ञात; मनोः—मनु के; वैवस्वतस्य—वैवस्वत; एते—ये सब; दश-पुत्राः—दस पुत्र; परन्तप—हे राजा।

हे राजा परीक्षित! मनु के दस पुत्रों में (प्रथम छः) इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त तथा नाभाग हैं। सातवाँ पुत्र दिष्ट नाम से जाना जाता है। फिर तरुष तथा पृषध के नाम आते हैं और दसवाँ पुत्र वसुमान कहलाता है।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
अश्विनावृभवो राजन्निन्द्रस्तेषां पुरन्दरः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

आदित्याः—आदित्यगण; वसवः—वसुगण; रुद्राः—रुद्रगण; विश्वेदेवाः—विश्वेदेवा; मरुद्-गणाः—तथा मरुत्गण; अश्विनौ—दोनों अश्विनीकुमार; ऋभवः—ऋभुगण; राजन्—हे राजा; इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; तेषाम्—उनमें से; पुरन्दरः—पुरन्दर।

हे राजा! इस मन्वन्तर में आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेवा, मरुत्गण, दोनों भाई अश्विनीकुमार

तथा ऋभु देवता हैं। इनका प्रधान राजा (इन्द्र) पुरन्दर है।

कश्यपोऽत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।
जमदग्निर्भरद्वाज इति सप्तर्षयः स्मृताः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

कश्यपः—कश्यप; अत्रिः—अत्रि; वसिष्ठः—वसिष्ठ; च—तथा; विश्वामित्रः—विश्वामित्र; अथ—तथा; गौतमः—गौतम;
जमदग्निः—जमदग्नि; भरद्वाजः—भरद्वाज; इति—इस प्रकार; सप्त-ऋषयः—सप्तर्षि; स्मृताः—विख्यात।

कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि तथा भरद्वाज सप्तर्षि कहलाते हैं।

अत्रापि भगवज्जन्म कश्यपाददितेरभूत् ।
आदित्यानामवरजो विष्णुर्वामनरूपधृक् ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

अत्र—इस मनु के शासन में; अपि—निश्चय ही; भगवत्-जन्म—भगवान् का प्राकट्य; कश्यपात्—कश्यप मुनि से; अदितेः—
माता अदिति के; अभूत्—सम्भव हुआ; आदित्यानाम्—आदित्यों में से; अवर-जः—सबसे छोटा; विष्णुः—साक्षात् विष्णु;
वामन-रूप-धृक्—भगवान् वामन का रूप धारण करते हुए।

इस मन्वन्तर में भगवान् आदित्यों में सबसे छोटे, वामन के नाम से अवतरित हुए। उनके

पिता कश्यप तथा माता अदिति थीं।

सङ्क्षेपतो मयोक्तानि सप्तमन्वन्तराणि ते ।
भविष्याण्यथ वक्ष्यामि विष्णोः शक्त्यान्वितानि च ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

सङ्क्षेपतः—संक्षेप में; मया—मेरे द्वारा; उक्तानि—बताये गये; सप्त—सात; मनु-अन्तराणि—मनुओं के परिवर्तन; ते—तुमको;
भविष्याणि—भावी मनु; अथ—भी; वक्ष्यामि—कहूँगा; विष्णोः—विष्णु के; शक्त्या अन्वितानि—शक्ति सम्पन्न; च—भी।

मैंने तुमसे संक्षेप में सात मनुओं की स्थिति बतला दी है। अब मैं भगवान् विष्णु के अवतारों

सहित भावी मनुओं का वर्णन करूँगा।

विवस्वतश्च द्वे जाये विश्वकर्मसुते उभे ।
संज्ञा छाया च राजेन्द्र ये प्रागभिहिते तव ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

विवस्वतः—विवस्वान की; च—भी; द्वे—दो; जाये—पत्नियाँ; विश्वकर्म-सुते—विश्वकर्मा की दो पुत्रियाँ; उभे—दोनों; संज्ञा—
संज्ञा; छाया—छाया; च—तथा; राज-इन्द्र—हे राजा; ये—जो; प्राक्—पहले; अभिहिते—वर्णन किये गये; तव—तुमसे।

हे राजा! मैं तुमसे पहले ही (छठे स्कंध में) विश्वकर्मा की दो पुत्रियों का वर्णन कर चुका हूँ

जिनके नाम संज्ञा तथा छाया थे, जो विवस्वान की प्रथम दो पत्नियाँ थीं।

तृतीयां वडवामेके तासां संज्ञासुतास्त्रयः ।

यमो यमी श्राद्धदेवश्छायायाश्च सुताञ्छृणु ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

तृतीयाम्—तीसरी पत्नी; वडवाम्—वडवा को; एके—कुछ लोग; तासाम्—तीनों पत्नियों में से; संज्ञा-सुता: त्रयः—संज्ञा की तीन संतानें; यमः—एक पुत्र यम; यमी—पुत्री यमी; श्राद्धदेवः—दूसरा पुत्र श्राद्धदेव; छायायाः—छाया का; च—तथा; सुतान्—पुत्रों को; शृणु—सुनो।

ऐसा कहा जाता है कि सूर्यदेव के एक तीसरी पत्नी भी थी जिसका नाम वडवा था। इन तीनों पत्नियों में से संज्ञा के तीन संतानें हुईं—यम, यमी तथा श्राद्धदेव। अब मैं छाया की सन्तानों का वर्णन करूँगा।

सावर्णिस्तपती कन्या भार्या संवरणस्य या ।

शनैश्चरस्तृतीयोऽभूदश्विनौ वडवात्मजौ ॥ १० ॥

शब्दार्थ

सावर्णिः—सावर्णि; तपती—तपती; कन्या—पुत्री; भार्या—पत्नी; संवरणस्य—राजा संवरण की; या—जो; शनैश्चरः—शनैश्चर; तृतीयः—तीसरी सन्तान; अभूत्—जन्म लिया; अश्विनौ—दोनों अश्विनी कुमार; वडवा-आत्म-जौ—वडवा नामक पत्नी के पुत्र।

छाया के एक पुत्र सावर्णि तथा एक पुत्री तपती थी जो बाद में राजा संवरण की पत्नी बनी। छाया की तीसरी सन्तान शनैश्चर (शनि) कहलाई। वडवा ने दो पुत्रों को जन्म दिया जिनके नाम अश्विनी-बन्धु हैं।

अष्टमेऽन्तर आयाते सावर्णिर्भविता मनुः ।

निर्मोकविरजस्काद्याः सावर्णितनया नृप ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

अष्टमे—आठवें; अन्तरे—मन्वन्तर में; आयाते—आने पर; सावर्णिः—सावर्णि; भविता—हो जायेगा; मनुः—आठवाँ मनु; निर्मोक—निर्मोक; विरजस्क-आद्याः—विरजस्क इत्यादि; सावर्णि—सावर्णि के; तनयाः—पुत्र; नृप—हे राजा।

हे राजा! आठवें मनु का काल आने पर सावर्णि मनु बनेगा। निर्मोक, विरजस्क इत्यादि उसके पुत्र होंगे।

तात्पर्य : इस समय वैवस्वत मनु का शासन है। ज्योतिषगणना के अनुसार हम वैवस्वत मनु के अष्टादशवें युग में हैं। प्रत्येक मनु इकहत्तर युगों तक रहता है और ब्रह्माजी के एक दिन में ऐसे चौदह मनु शासन चलाते हैं। इस समय हम सातवें मनु वैवस्वत के युग में हैं और आठवाँ मनु लाखों वर्ष बाद

आयेगा। लेकिन शुकदेव मुनि ने अधिकारियों से सुन रखा था जिसके आधार पर वे भविष्यवाणी करते हैं कि आठवाँ मनु सावर्णि होगा और उसके पुत्रों में निर्मोक तथा विरजस्क होंगे। शास्त्र यह बता सकते हैं कि लाखों वर्ष बाद क्या होगा।

तत्र देवाः सुतपसो विरजा अमृतप्रभाः ।
तेषां विरोचनसुतो बलिरिन्द्रो भविष्यति ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

तत्र—उस मन्वन्तर में; देवाः—देवतागण; सुतपसः—सुतपा; विरजाः—विरजगण; अमृतप्रभाः—अमृत प्रभगण; तेषाम्—उनमें से; विरोचन-सुतः—विरोचन का पुत्र; बलिः—महाराज बलि; इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; भविष्यति—होगा।

आठवें मन्वन्तर में सुतपा, विरज तथा अमृतप्रभगण देवता होंगे और विरोचन पुत्र बलि महाराज देवताओं के राजा इन्द्र होंगे।

दत्त्वेमां याचमानाय विष्णवे यः पदत्रयम् ।
राद्धमिन्द्रपदं हित्वा ततः सिद्धिमवाप्स्यति ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

दत्त्वा—दान में देकर; इमाम्—इस समग्र ब्रह्माण्ड को; याचमानाय—उससे याचना करने वाले; विष्णवे—भगवान् विष्णु को; यः—बलि महाराज; पद-त्रयम्—तीन पग भूमि; राद्धम्—प्राप्त किया; इन्द्र-पदम्—इन्द्र का स्थान; हित्वा—त्यागकर; ततः—तत्पश्चात्; सिद्धिम्—सिद्धि; अवाप्स्यति—प्राप्त करेगा।

बलि महाराज ने भगवान् विष्णु को तीन पग भूमि दान में दी जिसके कारण उन्हें तीनों लोक खोने पड़े। किन्तु बाद में बलि द्वारा सर्वस्व दान दे दिये जाने पर जब भगवान् विष्णु प्रसन्न हुए तो बलि महाराज को जीवन की सिद्धि प्राप्त हो जाएगी।

तात्पर्य : भगवद्गीता (७.३) में कहा गया है—मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये—लाखों लोगों में से कोई एक जीवन सिद्धि के लिए प्रयास करता है। यहाँ पर इस सिद्धि का वर्णन है। राद्धमिन्द्रपदं हित्वा ततः सिद्धिमवाप्स्यति। सिद्धि तो भगवान् विष्णु की कृपा प्राप्त करने में है, योगसिद्धियों में नहीं। योगसिद्धियाँ—अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व तथा कामावसायिता—क्षणिक हैं। चरमसिद्धि तो भगवान् विष्णु की कृपा प्राप्त करना है।

योऽसौ भगवता बद्धः प्रीतेन सुतले पुनः ।
निवेशितोऽधिके स्वर्गादधुनास्ते स्वराडिव ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

यः—बलि महाराज; असौ—वही; भगवता—भगवान् द्वारा; बद्धः—बाँधा जाकर; प्रीतेन—प्रेम के कारण; सुतले—सुतललोक में; पुनः—फिर; निवेशितः—स्थित; अधिके—अधिक ऐश्वर्यवान्; स्वर्गात्—स्वर्ग की अपेक्षा; अधुना—इस समय; आस्ते—स्थित हैं; स्व-राट् इव—इन्द्र के पद के समान।

भगवान् ने प्रेमपूर्वक बलि को बाँध लिया और फिर उन्हें सुतल राज्य में अधिष्ठित किया जो स्वर्गलोक की अपेक्षा अधिक ऐश्वर्यशाली है। इस समय बलि महाराज उसी लोक में रहते हैं और इन्द्र की अपेक्षा अधिक सुखी हैं।

गालवो दीप्तिमात्रामो द्रोणपुत्रः कृपस्तथा ।
ऋष्यशृङ्गः पितास्माकं भगवान्बादरायणः ॥ १५ ॥
इमे सप्तर्षयस्तत्र भविष्यन्ति स्वयोगतः ।
इदानीमासते राजन्स्वे स्व आश्रममण्डले ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

गालवः—गालव; दीप्तिमान्—दीप्तिमान; रामः—परशुराम; द्रोण-पुत्रः—द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा; कृपः—कृपाचार्य; तथा—और; ऋष्यशृङ्गः—ऋष्यशृङ्ग; पिता अस्माकम्—हमारे पिता; भगवान्—भगवान् के अवतार; बादरायणः—व्यासदेव; इमे—ये सब; सप्त-ऋषयः—सप्तर्षि; तत्र—उस मन्वन्तर में; भविष्यन्ति—होंगे; स्व-योगतः—भगवान् के प्रति सेवा के परिणामस्वरूप; इदानीम्—इस समय; आसते—वे सब विद्यमान हैं; राजन्—हे राजा; स्वे स्वे—अपने-अपने; आश्रम-मण्डले—विभिन्न आश्रमों में।

हे राजा! आठवें मन्वन्तर में गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, ऋष्यशृङ्ग तथा हमारे पिता व्यासदेव, जो नारायण के अवतार हैं, सप्तर्षि होंगे। इस समय वे सब अपने-अपने आश्रमों में निवास कर रहे हैं।

देवगुह्यात्सरस्वत्यां सार्वभौम इति प्रभुः ।
स्थानं पुरन्दराद्धृत्वा बलये दास्यतीश्वरः ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

देवगुह्यात्—अपने पिता देवगुह्य से; सरस्वत्याम्—सरस्वती के गर्भ में; सार्वभौमः—सार्वभौम; इति—इस प्रकार; प्रभुः—स्वामी; स्थानम्—स्थान; पुरन्दरात्—इन्द्र से; हृत्वा—बलपूर्वक छीने जाने पर; बलये—बलि महाराज को; दास्यति—देगा; ईश्वरः—स्वामी।

आठवें मन्वन्तर में अत्यन्त शक्तिशाली भगवान् सार्वभौम जन्म ग्रहण करेंगे। उनके पिता होंगे देवगुह्य और माता होंगी सरस्वती। वे पुरन्दर (इन्द्र) से राज्य छीन कर उसे बलि महाराज को देंगे।

नवमो दक्षसार्वर्णिर्मनुर्वरुणसम्भवः ।

भूतकेतुर्दीप्तकेतुरित्याद्यास्तत्सुता नृप ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

नवमः—नौवाँ; दक्ष-सावर्णिः—दक्षसावर्णि; मनुः—मनु; वरुण-सम्भवः—वरुण के पुत्र रूप में; भूतकेतुः—भूतकेतु; दीप्तकेतुः—दीप्तकेतु; इति—इस प्रकार; आद्याः—इत्यादि; तत्—उसके; सुताः—पुत्र; नृप—हे राजा।

हे राजा! नौवाँ मनु दक्षसावर्णि होगा जो वरुण का पुत्र होगा। भूतकेतु, दीप्तकेतु इत्यादि उसके पुत्र होंगे।

पारामरीचिगर्भाद्या देवा इन्द्रोऽद्भुतः स्मृतः ।

द्युतिमत्प्रमुखास्तत्र भविष्यन्त्यृषयस्ततः ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

पारा—पारगण; मरीचिगर्भ—मरीचिगर्भगण; आद्याः—आदि; देवाः—देवतागण; इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; अद्भुतः—अद्भुत; स्मृतः—ज्ञात; द्युतिमत्—द्युतिमान; प्रमुखाः—आदि; तत्र—उस नवें मन्वन्तर में; भविष्यन्ति—होंगे; ऋषयः—सप्तर्षि; ततः—तब।

नवें मन्वन्तर में पार तथा मरीचिगर्भ इत्यादि देवता रहेंगे। स्वर्ग के राजा इन्द्र का नाम होगा अद्भुत और द्युतिमान सप्तर्षियों में से एक होगा।

आयुष्मतोऽम्बुधारायामृषभो भगवत्कला ।

भविता येन संराद्धां त्रिलोकीं भोक्ष्यतेऽद्भुतः ॥ २० ॥

शब्दार्थ

आयुष्मतः—पिता आयुष्मान का; अम्बुधारायाम्—माता अम्बुधारा के गर्भ में; ऋषभः—ऋषभ; भगवत्-कला—भगवान् का अंशावतार; भविता—होगा; येन—जिससे; संराद्धाम्—सर्वशक्तिमान; त्रि-लोकीम्—तीनों लोकों को; भोक्ष्यते—भोग करेगा; अद्भुतः—अद्भुत नामक इन्द्र।

भगवान् के अंशावतार ऋषभदेव अपने पिता आयुष्मान तथा माता अम्बुधारा से जन्म लेंगे। वे अद्भुत नामक इन्द्र को तीनों लोकों का ऐश्वर्य भोगने के योग्य बनायेंगे।

दशमो ब्रह्मसावर्णिरुपश्लोकसुतो मनुः ।

तत्सुता भूरिषेणाद्या हविष्मत्प्रमुखा द्विजाः ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

दशमः—दसवें मनु; ब्रह्म-सावर्णिः—ब्रह्मसावर्णि; उपश्लोक-सुतः—उपश्लोक का पुत्र; मनुः—मनु होगा; तत्-सुताः—उसके पुत्र; भूरिषेण-आद्याः—भूरिषेण इत्यादि; हविष्मत्—हविष्मान; प्रमुखाः—प्रमुख; द्विजाः—सात ऋषि।

उपश्लोक का पुत्र ब्रह्मसावर्णि दसवाँ मनु होगा। भूरिषेण उसके पुत्रों में एक होगा और हविष्मान इत्यादि ब्राह्मण सप्तर्षि होंगे।

हविष्मान्सुकृतः सत्यो जयो मूर्तिस्तदा द्विजाः ।
सुवासनविरुद्धाद्या देवाः शम्भुः सुरेश्वरः ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

हविष्मान्—हविष्मान्; सुकृतः—सुकृत; सत्यः—सत्य; जयः—जय; मूर्तिः—मूर्ति; तदा—उस समय; द्विजाः—सप्तर्षि; सुवासन—सुवासन-गण; विरुद्ध—विरुद्ध-गण; आद्याः—इत्यादि; देवाः—देवता; शम्भुः—शम्भु; सुर-ईश्वरः—देवताओं का राजा इन्द्र ।

हविष्मान्, सुकृत, सत्य, जय, मूर्ति इत्यादि सप्तर्षि होंगे; सुवासन-गण तथा विरुद्धगण देवता होंगे और शम्भु उन सबका राजा इन्द्र होगा ।

विष्वक्सेनो विषूच्यां तु शम्भोः सख्यं करिष्यति ।
जातः स्वांशेन भगवान्गृहे विश्वसृजो विभुः ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

विष्वक्सेनः—विष्वक्सेन; विषूच्याम्—विषूची के गर्भ में; तु—तब; शम्भोः—शम्भु को; सख्यम्—मित्रता; करिष्यति—करेगा; जातः—उत्पन्न होकर; स्व-अंशेन—अपने अंश से; भगवान्—भगवान्; गृहे—घर में; विश्वसृजः—विश्वसृष्टा का; विभुः—अत्यन्त शक्तिशाली भगवान् ।

विश्वसृष्टा के घर में विषूची के गर्भ से भगवान् के स्वांश विष्वक्सेन के रूप में भगवान् अवतरित होंगे । वे शम्भु से मैत्री स्थापित करेंगे ।

मनुर्वै धर्मसावर्णिकेकादशम आत्मवान् ।
अनागतास्तत्सुताश्च सत्यधर्मादयो दश ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

मनुः—मनु; वै—निस्सन्देह; धर्म-सावर्णिः—धर्मसावर्णि; एकादशमः—ग्यारहवाँ; आत्मवान्—इन्द्रियों को वश में करने वाला; अनागताः—भविष्य में होंगे; तत्—उसके; सुताः—पुत्र; च—तथा; सत्यधर्म-आदयः—सत्यधर्म तथा अन्य; दश—दस ।

ग्याहरवें मन्वन्तर में धर्मसावर्णि मनु होंगे जो अध्यात्म ज्ञान के अत्यन्त विद्वान होंगे । उनके दस पुत्र होंगे जिनमें सत्यधर्म प्रमुख होगा ।

विहङ्गमाः कामगमा निर्वाणरुचयः सुराः ।
इन्द्रश्च वैधृतस्तेषामृषयश्चारुणादयः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

विहङ्गमाः—विहङ्गमगण; कामगमाः—कामगम-गण; निर्वाणरुचयः—निर्वाणरुचिगण; सुराः—देवता; इन्द्रः—इन्द्र; च—भी; वैधृतः—वैधृत; तेषाम्—उनमें से; ऋषयः—सप्तर्षि; च—भी; अरुण-आदयः—अरुण इत्यादि ।

विहंगम, कामगम, निर्वाणरुचि इत्यादि देवता होंगे । वैधृत देवताओं का राजा इन्द्र होगा और अरुण इत्यादि सप्तर्षि होंगे ।

आर्यकस्य सुतस्तत्र धर्मसेतुरिति स्मृतः ।
वैधृतायां हरेरंशस्त्रिलोकीं धारयिष्यति ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

आर्यकस्य—आर्यक का; सुतः—पुत्र; तत्र—उस ग्याहरवें मन्वन्तर में; धर्मसेतुः—धर्मसेतु; इति—इस प्रकार; स्मृतः—विख्यात;
वैधृतायाम्—माता वैधृता से; हरेः—भगवान् के; अंशः—अंशावतार; त्रि-लोकीम्—तीनों लोकों पर; धारयिष्यति—शासन
चलायेगा ।

आर्यक का पुत्र धर्मसेतु आर्यक की पत्नी वैधृता की कोख से भगवान् के अंशावतार के
रूप में जन्म लेगा और तीनों लोकों में शासन करेगा ।

भविता रुद्रसावर्णी राजन्द्रादशमो मनुः ।
देववानुपदेवश्च देवश्रेष्ठादयः सुताः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

भविता—होगा; रुद्र-सावर्णिः—रुद्र सावर्णि; राजन्—हे राजा; द्वादशमः—बारहवाँ; मनुः—मनु; देववान्—देववान;
उपदेवः—उपदेव; च—तथा; देवश्रेष्ठ—देवश्रेष्ठ; आदयः—इत्यादि; सुताः—मनु के पुत्र ।

हे राजा! बारहवाँ मनु रुद्रसावर्णि कहलायेगा । देववान, उपदेव तथा देवश्रेष्ठ उसके पुत्र होंगे ।

ऋतधामा च तत्रेन्द्रो देवाश्च हरितादयः ।
ऋषयश्च तपोमूर्तिस्तपस्व्याग्नीध्रकादयः ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

ऋतधामा—ऋतधामा; च—भी; तत्र—उस काल में; इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; देवाः—देवता; च—तथा; हरित-आदयः—हरित
इत्यादि; ऋषयः च—तथा सप्तर्षि; तपोमूर्तिः—तपोमूर्ति; तपस्वी—तपस्वी; आग्नीध्रक—आग्नीध्रक; आदयः—इत्यादि ।

इस मन्वन्तर में ऋतधामा इन्द्र होगा और हरित इत्यादि देवता होंगे । तपोमूर्ति, तपस्वी तथा
आग्नीध्रक सप्तर्षि होंगे ।

स्वधामाख्यो हरेरंशः साधयिष्यति तन्मनोः ।
अन्तरं सत्यसहसः सुनृतायाः सुतो विभुः ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

स्वधामा-आख्यः—स्वधामा नामक; हरेः अंशः—भगवान् का अंश अवतार; साधयिष्यति—शासन करेगा; तत्-मनोः—उस मनु
के; अन्तरम्—मन्वन्तर; सत्यसहसः—सत्यसहा का; सुनृतायाः—सुनृता का; सुतः—पुत्र; विभुः—अत्यन्त शक्तिशाली ।

माता सुनृता तथा पिता सत्यसहा से भगवान् का अंशावतार स्वधामा उत्पन्न होगा । वह उस
मन्वन्तर में शासन करेगा ।

मनुस्त्रयोदशो भाव्यो देवसावर्णिरात्मवान् ।
चित्रसेनविचित्राद्या देवसावर्णिदेहजाः ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

मनुः—मनु; त्रयोदशः—तेरहवाँ; भाव्यः—होगा; देव-सावर्णिः—देवसावर्णि; आत्मवान्—आध्यात्मिक ज्ञान में उन्नत;
चित्रसेन—चित्रसेन; विचित्र-आद्याः—तथा विचित्र इत्यादि; देव-सावर्णि—देवसावर्णि के; देह-जाः—पुत्र।

तेरहवें मनु का नाम देवसावर्णि होगा और वह आध्यात्मिक ज्ञान में काफी बढ़ा-चढ़ा होगा।

चित्रसेन तथा विचित्र उसके पुत्रों में से होंगे।

देवाः सुकर्मसुत्रामसंज्ञा इन्द्रो दिवस्पतिः ।
निर्मोकतत्त्वदर्शाद्या भविष्यन्त्यृषयस्तदा ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

देवाः—देवतागण; सुकर्म—सुकर्मा-गण; सुत्राम-संज्ञाः—तथा सुत्राम नामक; इन्द्रः—इन्द्र; दिवस्पतिः—दिवस्पति; निर्मोक—
निर्मोक; तत्त्वदर्श-आद्याः—तत्त्वदर्श इत्यादि; भविष्यन्ति—होंगे; ऋषयः—सप्तर्षि; तदा—उस समय।

तेरहवें मन्वन्तर में सुकर्मा तथा सुत्रामा इत्यादि देवता होंगे, दिवस्पति स्वर्ग का राजा इन्द्र
होगा और निर्मोक तथा तत्त्वदर्श सप्तर्षि होंगे।

देवहोत्रस्य तनय उपहर्ता दिवस्पतेः ।
योगेश्वरो हरेरंशो बृहत्यां सम्भविष्यति ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

देवहोत्रस्य—देवहोत्र का; तनयः—पुत्र; उपहर्ता—उपकार करने वाला; दिवस्पतेः—दिवस्पति अर्थात् उस काल के इन्द्र का;
योग-ईश्वरः—योगशक्ति का स्वामी, योगेश्वर; हरेः अंशः—भगवान् का अंशावतार; बृहत्याम्—अपनी माता बृहती के गर्भ में;
सम्भविष्यति—प्रकट होगा।

देवहोत्र का पुत्र योगेश्वर भगवान् के अंशावतार रूप में प्रकट होगा। उसकी माता का नाम
बृहती होगा। वह दिवस्पति के कल्याणार्थ कार्य करेगा।

मनुर्वा इन्द्रसावर्णिश्चतुर्दशम एष्यति ।
उरुगम्भीरबुधाद्या इन्द्रसावर्णिवीर्यजाः ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

मनुः—मनु; वा—या; इन्द्र-सावर्णिः—इन्द्रसावर्णि; चतुर्दशमः—चौदहवाँ; एष्यति—बनेगा; उरु—उरु; गम्भीर—गम्भीर; बुध-
आद्याः—बुध इत्यादि; इन्द्र-सावर्णि—इन्द्रसावर्णि के; वीर्य-जाः—वीर्य से उत्पन्न।

चौदहवें मनु का नाम इन्द्रसावर्णि होगा। उसके पुत्रों के नाम उरु, गम्भीर तथा बुध होंगे।

पवित्राश्चाक्षुषा देवाः शुचिरिन्द्रो भविष्यति ।

अग्निर्बाहुः शुचिः शुद्धो मागधाद्यास्तपस्विनः ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

पवित्राः—पवित्रगण; चाक्षुषाः—चाक्षुषगण; देवाः—देवता; शुचिः—शुचि; इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; भविष्यति—होगा; अग्निः—अग्नि; बाहुः—बाहु; शुचिः—शुचि; शुद्धः—शुद्ध; मागध—मागध; आद्याः—इत्यादि; तपस्विनः—तपस्वी मुनि।

पवित्रगण तथा चाक्षुषगण इत्यादि देवता होंगे और शुचि इन्द्र होगा। अग्नि, बाहु, शुचि, शुद्ध, मागध तथा अन्य तपस्वी सप्तर्षि होंगे।

सत्रायणस्य तनयो बृहद्भानुस्तदा हरिः ।

वितानायां महाराज क्रियातन्तून्वितायिता ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

सत्रायणस्य—सत्रायण का; तनयः—पुत्र; बृहद्भानुः—बृहद्भानु; तदा—उस काल में; हरिः—भगवान्; वितानायाम्—विताना के गर्भ से; महा-राज—हे राजा; क्रिया-तन्तून्—सारे आध्यात्मिक कार्यकलाप; वितायिता—सम्पन्न करेंगे।

हे राजा परीक्षित! चौदहवें मन्वन्तर में भगवान् विताना के गर्भ से प्रकट होंगे और उनके पिता का नाम सत्रायण होगा। यह अवतार बृहद्भानु के नाम से विख्यात होगा और वह आध्यात्मिक कार्यकलाप करेगा।

राजंश्चतुर्दशैतानि त्रिकालानुगतानि ते ।

प्रोक्तान्येभिर्मितः कल्पो युगसाहस्रपर्ययः ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

राजन्—हे राजा; चतुर्दश—चौदह; एतानि—ये सब; त्रि-काल—तीनों काल (भूत, वर्तमान, भविष्य); अनुगतानि—फैले हुए; ते—तुमसे; प्रोक्तानि—वर्णन किए गए; एभिः—इनके द्वारा; मितः—अनुमानित; कल्पः—ब्रह्मा का एक दिन; युग-साहस्र—चारों युगों के एक हजार चक्र; पर्ययः—से युक्त।

हे राजा! मैंने अभी तुमसे भूत, वर्तमान तथा भविष्य में हुए अथवा होने वाले चौदहों मनुओं का वर्णन किया। ये मनु कुल मिलाकर जितने समय तक शासन करते हैं वह एक हजार युग चक्र है। यह कल्प या ब्रह्माजी का एक दिन कहलाता है।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कंध के “भावी मनुओं का वर्णन” नामक तेरहवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।